देश की लोकप्रिय मासिक हिन्दी खेल पत्रिका

शानदार 30वां वर्ष

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

फरवरी-2024

न्यूज मैग्जीन

मूल्य ₹25

देश की ओलंपिक एसोसिएशन में अंदरूनी कलह का 'ओलंपिक'

दोबारा विश्व नंबर एक बनने वाले सात्विक और चिराग पहले भारतीय

पेरिस ओलंपिक काउंटडाउन 1

बैजबॉल vs स्पिनबॉल का महामुकाबला

रोहन बोपन्ना 40 पार, खेल दमदार

ऑस्ट्रेलियन ओपन के पुरुष युगल में रोहन बोपन्ना और मैथ्यू एबडेन की जोड़ी ने इतिहास रच दिया।

भारतीय टेनिस के उभरते सितारे सुमित नागल

Website: www.nationalsportstimes.org स्पोर्ट्स वेब पोर्टल

आरएनआई नंबरः 69917/94 डाक पंजीयन म.प्र. / भोपाल / 607 / 2023-25 / 1 तारीख को प्रकाशित / डाक पोस्टिंग 5 तारीख

Email: nationalsportstimes@yahoo.com, nationalsportstimes@gmail.com

पंजीयन संख्या (आरएनआई): 69917/94, डाक पंजी. न. मप्र/भोपाल/607/2021-23

■ वर्ष-30 ■ अंक-8 ■ क्रमांक-279 ■ फरवरी-2024 ■ मूल्य-25 रूपये

संपादकीय मंडल

प्रधान संपादक	:	इन्द्रजीत मौर्य
कार्यकारी संपादक	:	सुरेश कुमार
प्रबंधक	:	निखिल कुमार
विज्ञापन प्रबंधक	:	अजय मौर्य
विज्ञापन सहायक	:	रामेश्वर भार्गव
डिजाइनिंग	:	सुरेन्द्र डहारे
छायाकार	:	निर्मल व्यास
कार्टूनिस्ट	:	वीरेंद्र कुमार ओगले

सलाहकार संपादक

- अरुणेश्वर सिंहदेव
- अरुण भगोलीवाल
- आशीष पाण्डे
- शांति कुमार जैन
- समीर मिरीकर
- सुशील सिंह ठाकुर
- राजीव सक्सेना
- शंकर मूर्ति

विशेष संवाददाता / समीक्षक

अरुण अर्णव, अनिल वर्मा, हरेंद्र नागेश साहू, हरीश हर्ष, चरनपालसिंह सोबती, वीरेन्द्र शुक्ल, सरिता अरगरे, मोहन द्विवेदी, मो. ईशाउद्दीन, धर्मेश यशलाहा, दामोदर आर्य, डॉ. मुनीष राणा, प्रशांत सेंगर, सुदेश सांगते, डॉ. प्रशांत मिश्रा, विजय रांगणेकर, संजय बेनर्जी, अमरनाथ, मो. अफरोज।

संपादकीय कार्यालय

बी-10, छत्रपति नगर, अयोध्या बायपास, भोपाल
फोन : 0755-4218892,
मोबाइलः 094250-25727, 8349994166

पंजीयन कार्यालय : ई-197, ओल्ड मीनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, भोपाल, मप्र-462023,

E-Mail: nationalsportstimes@Yahoo.com
nationalsportstimes@gmail.com

फोटो स्रोतः इंटरनेट, सोशल मीडिया, अखबार एवं ब्यूरो कार्यालय

ब्यूरो कार्यालय

इंदौर, उज्जैन, नागदा, देवास, सीहोर, विदिशा, रायसेन, बुरहानपुर, धार, जबलपुर, ग्वालियर, दतिया, रीवा, सतना, खण्डवा, खरगोन, शहडोल, छिंदवाड़ा, सागर, छतरपुर, होशंगाबाद, बैतूल, इटारसी, रतलाम, शिवपुरी, ललितपुर, झाँसी, नागपुर, रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, मुंबई, रत्नागिरी, कोलहापुर, पूना, जलगाँव, दिल्ली, नोएडा, हरियाणा, लुधियाना, जालंधर, मेरठ, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, गोरखपुर, मिर्जापुर, जयपुर, पटना, नैनीताल, देहरादून, कुमाऊ, गाजियाबाद, एंगुल (उड़ीसा), ऊना, शिमला, भुवनेश्वर।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक इन्द्रजीत मौर्य द्वारा सुलेख आफसेट प्लाट नं. 150, एल-5, मनोरमा काम्प्लेक्स, जोन-1, एमपी नगर, भोपाल से मुद्रित तथा ई-197, मीनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, राज होम्स कॉलोनी, भोपाल से प्रकाशित। संपादक इन्द्रजीत मौर्य।

खेल पत्रिका में प्रकाशित लेखों की जिम्मेदारी लेखक की है। प्रकाशक एवं संपादक का लेखक से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।

21 शटल की उड़ान

दोबारा विश्व नंबर एक बनने वाले सात्विक और चिराग पहले भारतीय

अंदर के पन्नों पर

दिल छू लेने वाली है मोगली की कहानी	05
भारतीय टेनिस के बड़े सितारे सुमित नागल	09
खेल बजट 2024	10
महाराष्ट्र फिर बना विजेता	12
रांची : ओलंपिक हॉकी क्वालिफायर्स	15
एशिया कप फुटबॉल	17
मेसी व बोनमती साल सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी	19
अल्टीमेट खो-खो	23
राष्ट्रीय खेल पुरस्कार	24
बैजबॉल vs स्पिनबॉल का महामुकाबला	26
चर्चा रणजी ट्रॉफी की	31
बीसीसीआई अवार्ड	34

Website: www.nationalsportstimes.org

देश की लोकप्रिय मासिक हिन्दी खेल पत्रिका

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

आज ही अपनी प्रति बुक कराएं...

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

घर बैठे कैसे पाएं

आपको सिर्फ इतना करना है कि आप इस कूपन को भरकर भेजें और नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स खुद चलकर आपके घर दस्तक देगा।

मैं ..... नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स का वार्षिक सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं। वार्षिक शुल्क 300 रुपए, दो वर्ष के लिए 600 रुपए (50 रुपए की छूट), तीन वर्ष के लिए 900 रुपए (80 रुपए की छूट), पांच वर्ष के लिए 1500 रुपए (100 रुपए की छूट) एवं आजीवन सदस्यता 15,000 रुपए मनीआर्डर या नगद ..... से भेज रहा हूं।

पूरा पता .....

.....

मो. ..... ईमेल.....

नोट: *मनीऑर्डर या नगद राशि नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स के नाम से भेजें। *आपकी सदस्यता राशि प्राप्त होने के अगले माह से पत्रिका के अंक नियमित रूप से भिजवाए जाएंगे। *पत्रिका केवल डाक द्वारा ही भेजी जाएगी। *किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय होगा।

पत्रिका प्राप्त करने के लिए इस पते पर संपर्क करें: ई-197, ओल्ड मीनाल रेसीडेंस, जेके रोड, भोपाल-462023 (मप्र)
E-Mail: nationalsportstimes@yahoo.com nationalsportstimes@gmail.com
फोनः 0755-4218892, मोबाइलः 09425025727

इन्द्रजीत मौर्य
प्रधान संपादक

इस जख्म को भरने में बरसो लगेंगे

भारतीय महिला हॉकी टीम इन दिनों अपने खराब प्रदर्शन को लेकर सवालों के घेरे में है। टोक्यो ओलंपिक में भारतीय महिला हॉकी टीम को पदक नहीं मिला लेकिन चौथे स्थान पर रहकर टीम ने पूरे देश की शाबाशी बटोरी थी। रांची में हुए ओलंपिक क्वालिफायर में जापान के हाथों हार के बाद टोक्यो का सपना पेरिस ओलंपिक में पूरा होने का अरमान धरा रह गया। अब इस जख्म को भरने में बरसों लगेंगे। बार-बार समान गलतियों को दोहराना, आपसी तालमेल का अभाव, प्रदर्शन में अनिरंतरता जैसे कई सवाल हैं जिनका जवाब भारतीय महिला हॉकी टीम को देना होगा। पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालिफाई करने में नाकाम रहने के बाद अब भविष्य को लेकर अनिश्चितता भी खिलाड़ियों की आंखों में साफ नजर आ रही है। इस हार से उबरने में बहुत समय लगेगा। नौ पेनाल्टी कॉर्नर में से एक को भी गोल में नहीं बदलना छोटी बात नहीं है। ओलंपिक के लिए क्वालिफाई नहीं करने से महिला हॉकी काफी नीचे आ गई है।

एफआईएच ओलंपिक क्वालिफायर में तीसरे स्थान के मैच में जापान से 0-1 से हारी भारतीय टीम के पिछले कुछ अर्से के प्रदर्शन का विश्लेषण करें तो लगता है कि यह तो होना ही था। हार के बाद कप्तान सविता पूनिया और बाकी खिलाड़ियों की आंखों में आंसू और चेहरे पर मायूसी थी। भविष्य के बारे में पूछने पर कोच यानिके शॉपमैन ने कहा, 'मुझे नहीं पता।' हॉकी इंडिया ने तुरंत किसी बदलाव की संभावना से इनकार किया है और अब जबकि ओलंपिक खेलने का मौका हाथ से निकल ही चुका है, बदलाव करके भी क्या हासिल हो जाएगा। अब सोच समझकर ही आगे बढ़ना होगा। पिछले दो ओलंपिक खेल चुकी भारतीय महिला हॉकी टीम ने तीन दशक की मेहनत के बाद विश्व स्तर पर पुरजोर उपस्थिति दर्ज कराई थी।

भारत की हार पर 4 बार के ओलंपियन महान फॉरवर्ड धनराज पिल्लै का मानना है कि महिला हॉकी टीम में अनुभवी खिलाड़ियों की कमी नजर आई। उन्हें नहीं लगता कि टीम को विदेशी कोच की जरूरत है। चार ओलंपिक और चार विश्व कप खेल चुके धनराज ने कहा, पिछले एक डेढ़ साल में महिला हॉकी कोच को पूरी स्वतंत्रता दी गई, लेकिन 3-4 अनुभवी खिलाड़ी टीम में वापसी के लिए तरसते रहे, जिन्हें सीनियर बोलकर टीम से निकाल दिया। धनराज पिल्लै ने टोक्यो ओलंपिक में टीम की कप्तान रही रानी रामपाल का नाम लिए बगैर कहा, इन लड़कियों ने घरेलू हॉकी और राष्ट्रीय खेलों में अच्छा प्रदर्शन किया। सीनियर खिलाड़ियों को टीम में रखकर कैसे अच्छा प्रदर्शन कराना है, यह कोच के हाथ में होता है। उन्हें मौका दिए बिना बाहर करना सही नहीं था। इसका नतीजा सामने है।

हॉकी इंडिया को खुद कई सवालों के जवाब देने होंगे। टोक्यो में भारतीय टीम की कप्तान रही मिडफील्ड की जान रानी रामपाल को कारण बताए बिना बाहर क्यों किया गया। टीम में मतभेदों की खबरें भी। राष्ट्रीय खेलों में 18 गोल करने के बावजूद रानी को मौका नहीं दिया गया बल्कि उन्हें सब जूनियर टीम का कोच बना दिया गया। पेनॉल्टी कॉर्नर विशेषज्ञ दीप ग्रेस इक्का और गुरजीत कौर को भी युवा खिलाड़ियों को जगह देने के लिए बाहर किया गया लेकिन यह फैसला भी आत्मघाती रहा। टीम को इस हार से उबरने में लंबा वक्त लगेगा।

विशेष

दिल छू लेने वाली है रेसलिंग की 'मोगली' की कहानी

पुणे में पिछले दिनों हुए रेसलिंग ट्रायल्स में कर्नाटक की लीना एंथो सिद्डी भले ही मेडल जीतने से चूक गई लेकिन उनका वहां तक पहुंचना कई लड़कियों के लिए मिसाल है। लीना का परिवार कर्नाटक के उतरा कन्नड़ जिले के हारियल तालुक के जंगलों में रहता है। लीना अफ्रीकन मूल के भारतीय समुदाय सिद्डी का हिस्सा है। यह समुदाय जंगलों में ही रहता है और वहां से बाहर आने में बहुत असहज महसूस करता है। इंडियन एक्सप्रेस से बातचीत में लीना ने बताया कि उनका परिवार खाने के लिए भी दूसरों पर मोहताज होता था लेकिन खेल के कारण उनकी जिंदगी में काफी कुछ बदल गया। लीना ने कहा, 'मेरे पिता हमें दूसरों की शादियों में ले जाते थे ताकि हमें पेट भर के खाना मिल सके। हम दूसरों की जमीन पर फसल उगाते थे और उसका ज्यादातर हिस्सा जमीन के मालिक को देते थे। इसी कारण पूरे परिवार को खाना खिलाना मुश्किल होता था।' लीना 11 भाई-बहन है और सबकी जिम्मेदारी पिता पर थी। साइ होस्टल में चयन के बाद लीना को पूरी डाइट मिलने लगी।

अपने समुदाय के बारे में बात करते हुए सिद्डी ने कहा, 'हम सिद्डी समुदाय के लोग आसानी से जंगल से बाहर नहीं निकलते। हमें असहज महसूस होता है। हर कोई हमें अजीब तरीके से देखता है। लेकिन कुश्ती के कारण मैं जंगल के बाहर निकली और दुनिया देखी। मेरी वजह से बाकी लड़कियां भी कुश्ती करने लगी है।' लीना कुश्ती में आने का श्रेय अपने पिता को दिया है। उन्होंने कहा, 'मेरे पिता को कबड्डी और कुश्ती पसंद थी लेकिन उन्हें लोकल क्लब में मौका नहीं मिला। जब 2008 और 2012 में सुशील कुमार मेडल लेकर वापस आए तो सभी उनसे प्रेरित हुए। पिता ने तभी फैसला कर लिया कि उनकी अगली औलाद रेसलर बनेगी जो सुशील की तरह ओलंपिक में खेलेगी। इसी कारण जब मैं पांचवीं कक्षा में थी तभी से मेरी ट्रेनिंग शुरू हो गई। मैं तब गांव के दंगल में हिस्सा लेती थी और उसी कमाई से परिवार का पेट भी पालती थी'। दंगल में हिस्सा लेकर न सिर्फ लीना को पैसे मिले बल्कि उनके खेल में भी सुधार हुआ। वह यूट्यूब पर सुशील कुमार की वीडियो देखती थीं और उसी तरह कुश्ती करने की कोशिश की। उन्होंने लिखा, 'मैं पहले सोचती थी कि यहां क्यों आई। लोग मुझे ताने मारते थे। फिर मेरे कोच ने समझाया कि कोई कुछ भी कहे तुम मत सुनो। बस लड़ो और जीतो। मैं खेल से नौकरी हासिल करना चाहती हूं।'

वीरेन्द्र कुमार ओगले
खेल कार्टूनिस्ट

43 साल की उम्र में ग्रैंड स्लैम टाइटल और एटीपी डबल्स रैंकिंग में विश्व नंबर 1- ये है रोहन बोपन्ना का नया परिचय

बोपन्ना... 40 पार, खेल दमदार

रोहन बोपन्ना के बारे में 5 दिलचस्प फैक्ट

1 जन्म मार्च 1980 में कर्नाटक के कूर्ग जिले में। शुरू से टेनिस खेले। जब पढ़ने अमेरिका गए तो जहां कॉलेज में पढ़ाई की, वहां भी खेले और धीरे-धीरे पेशेवर टेनिस चैंपियनशिप में भी नाम कमाया।

2 ज्यादा मशहूरी डबल्स टेनिस में मिली- गैब्रिएला डाब्रोवस्की के साथ 2017 फ्रेंच ओपन में मिक्स्ड डबल्स टाइटल जीतना पहली बड़ी कामयाबी था।

3 अर्जुन पुरस्कार विजेता। 2002 से भारत की डेविस कप टीम में। इसके अलावा- 2006 एशियाई होपमैन कप में सानिया के साथ जीत हासिल की (ये 2007 होपमैन कप के लिए एक क्वालीफाइंग टूर्नामेंट था)।

4 एटीपी टूर पर ज्यादा सफलता मिली, पेशेवर सर्किट पर डबल्स विशेषज्ञ की पहचान बनी और कई डबल्स टाइटल जीते।

5 भारत में टेनिस को बढ़ावा देने और इसे विकसित करने में ख़ास योगदान- युवा टेलेंट को निखारने और खेल में श्रेष्ठता के मौके दिलाने के लिए, 'रोहन बोपन्ना टेनिस अकादमी' की शुरुआत की और खुद भी खेल रहे हैं।

चरनपाल सिंह सोबती
खेल समीक्षक

2024 साल का पहला ग्रैंड स्लैम टेनिस टूर्नामेंट ऑस्ट्रेलियन ओपन, भारतीय टेनिस के लिए एक ऐसी खबर बना जिसकी कहीं न चर्चा थी और न उम्मीद की थी। सच तो ये है कि ऑस्ट्रेलियन ओपन में भारतीय खिलाड़ी की मौजूदगी को खुद भारत में भी कोई ख़ास चर्चा नहीं मिली थी। ऐसे में ये खबर हैरान करने वाली है कि भारत के रोहन बोपन्ना ने ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एबडेन के साथ जोड़ी में, पुरुष डबल्स फाइनल जीत लिया। फाइनल में इटली के सिमोन बोलेली और एंड्रिया वावसोरी की जोरदार जोड़ी को हराकर सबसे बड़ी उम्र में ग्रैंड स्लैम टाइटल जीतने का रिकॉर्ड बनाया- जी हां बोपन्ना 43 साल से भी ज्यादा के हैं। स्किल और चपलता में हैरान करते हुए भारतीय टेनिस उस्ताद, रोहन बोपन्ना ने ऑस्ट्रेलियन ओपन में, टेनिस इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया। ये बोपन्ना का दूसरा ग्रैंड स्लैम टाइटल है- इससे पहले मिक्स्ड डबल्स में कनाडा की गैब्रिएला डाब्रोवस्की के साथ 2017 फ्रेंच ओपन जीते थे। रोहन युगल टेनिस के शिखर पर (नंबर वन) आ गए हैं। मैथ्यू एबडेन के साथ उनकी जोड़ी भी विश्व में नंबर एक बन गई है।

पहला सेट रोमांचक टाईब्रेकर पर खत्म हुआ और बोपन्ना-एबडेन 6(7)-6(0) के स्कोर पर जीते। बिना डर, आगे भी खेले- आक्रामक शॉट्स और संयम सब था और हर गेम के साथ मुकाबले का रंग बदलता गया। आखिर में दूसरे सेट को 7-5 के स्कोर के साथ, कड़े मुकाबले के बाद जीते। एक घंटे और 39 मिनट तक चला ये फाइनल। उम्र 43 साल से भी ज्यादा है तो क्या हुआ- बोपन्ना को लगता है कि अभी अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ टेनिस खेल रहे हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह है अपने शरीर का सही मैनेजमेंट और लगातार प्रेक्टिस। अपने लिए, एक फिजियो पर पैसा खर्चना बड़ा सही फैसला रहा और वे, उनके साथ ही, एक टूर्नामेंट से दूसरे टूर्नामेंट जाते हैं- कोच से भी ज्यादा उनका साथ रहता है।

ग्रैंड स्लैम की बात करें तो इस जीत से पहले, बोपन्ना दो बार 2013 और 2023 में यूएस ओपन में पुरुष डबल्स फाइनल भी खेले थे लेकिन टाइटल हासिल नहीं कर पाए। ऑस्ट्रेलियन ओपन, सफलता का मंच साबित हुआ। पुरुष टेनिस में सबसे बड़ी उम्र में ग्रैंड स्लैम चैंपियन का पिछला रिकॉर्ड जीन-जूलियन रोजर का था- वे 40 साल की उम्र में मार्सेलो अरेवोला के साथ 2022 में फ्रेंच ओपन पुरुष डबल्स ट्रॉफी जीते थे। भारतीय खिलाड़ियों की बात करे तो पुरुष डबल्स ग्रैंड स्लैम टाइटल जीतने वाले सिर्फ तीसरे भारतीय हैं- उनसे पहले लिएंडर पेस और महेश भूपति के नाम ही टाइटल हैं जबकि सानिया मिर्जा ने महिला टेनिस में ऐसा किया है। रॉड लेवर एवेन्यू में इस मुकाबले में कैसी टेनिस खेले इसका अंदाजा इसी से हो जाएगा कि सिर्फ एक बार सर्विस ब्रेक हुई। बोपन्ना की इस बात के लिए तारीफ़